शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

प्रियंका गुप्ता*
राजीव अग्रवाल**

शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है, शिक्षा का प्रत्येक स्तर अपने आप में महत्वपूर्ण है परंतु प्राथमिक शिक्षा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। मनोवैज्ञानिक फ्रॉयड भी कहते हैं, "शिशु चार वर्षों में वह सब बन जाता है जो उसे भविष्य में बनना होता है।" अतः विद्यार्थी के जीवन के प्रारंभिक वर्ष उसके संपूर्ण जीवन के निर्धारक होते हैं। इस दौरान वह जो कुछ भी देखता है, सीखता है, वह अनुकूल वातावरण के प्रभाव से स्थायी होता जाता है। अतः यह परिवार, विद्यालय एवं समाज का दायित्व है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो तथा भविष्य स्थिर एवं सुदृढ़ हो।

शिक्षा के अति महत्वपूर्ण पहलुओं में से 'व्यावसायिक कुशलता एवं कौशलात्मक निपुणता' एक है। अन्य विभिन्न परिणामों के साथ-साथ शिक्षा की निष्पत्ति में आत्मनिर्भरता होना आवश्यक है। सर्वप्रथम महात्मा गांधी ने व्यावसायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा की संकल्पना की। उन्होंने बेसिक शिक्षा का एक नया विचार प्रदान किया जो आत्मबल प्रदान करने वाला एक सबल माध्यम था। शिक्षा के संबंध में उनके विचार मौलिक थे। उन्होंने अपने शिक्षा संबंधी विचार *हरिजन* पत्रिका में प्रकाशित करना प्रारंभ किया, आगे चलकर यही विचार बेसिक शिक्षा योजना का आधार बने।

18 फ़रवरी सन् 1939 ई. *हरिजन* पत्रिका में उन्होंने लिखा — " हमारी शिक्षा को क्रांतिकारी हो जाना चाहिए। मस्तिष्क को हाथ के द्वारा शिक्षित करना आवश्यक है, यदि मैं कवि होता तो पाँच अँगुलियों की संभावनाओं पर कविता लिखता। आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है, हाथ एवं पैर कुछ नहीं। वह व्यक्ति जो अपने हाथों को प्रशिक्षित नहीं करते हैं वह शिक्षा के अति साधारण मार्ग पर चलते हैं, जिस प्रकार बिना संगीत के जीवन। पुस्तकीय ज्ञान ही बच्चों का संपूर्ण ध्यान आकर्षित करने में पर्याप्त नहीं है। शब्दों की शिक्षा थकान को बढ़ाती है तथा बच्चों के मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम करती

* *शोधार्थी,* अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)
** *विभागाध्यक्ष,* शिक्षक–शिक्षा विभाग, अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)

है। यदि शिक्षा सही एवं गलत के बीच अंतर करना नहीं सिखाती, एक को ग्रहण करना दूसरे को त्यागना नहीं सिखाती, तो वह मिथ्या है।"

जहाँ विभिन्न शिक्षाविदों ने शिक्षा के वृहद अर्थ प्रस्तुत किये हैं, वहीं आज एक तरफ शिक्षा सूचना एवं तथ्यों की जानकारी बनकर रह गई है, तो वहीं दूसरी तरफ शिक्षा गुणवत्ताविहीन हो गई है। पुस्तकीय ज्ञान को अत्यधिक महत्ता उन्हें सीमित एवं कठोर बना देती है, इस पर भी उस ज्ञान की गुणवत्ता संदेहास्पद है। हम शिक्षा से शरीर, मन एवं आत्मा के विकास की बात करते हैं परंतु यहाँ यह विचारणीय है कि संभावित विकास के लिए उचित पर्यावरण होना आवश्यक है। अनुकूल पर्यावरण के अभाव में सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकों का अत्यधिक भार है तथा इस भार को कलात्मकता के साथ साझा करने की आवश्यकता है। इसे उतना ही महत्त्व दिया जाना आवश्यक है, जितना अन्य विषयों को। प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं में अद्वितीय है। अतः शैक्षिक पाठ्यक्रम में विभिन्न क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है, जिससे उनकी प्रतिभा को अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त हों। ऐसे क्रियाकलाप जो मनोरंजन के साथ-साथ समाजोपयोगी, उत्पादक हों एवं आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो। प्रस्तुत अध्ययन ऐसे ही कुछ विशेष क्रियाकलापों पर आधारित है।

क्या हैं समाजोपयोगी उत्पादक कार्य?

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एक नवीन एवं विस्तृत अवधारणा है, यह गांधी जी के हस्त शिल्प पर आधारित हैं। इसके नाम और रूप बदलते रहे परंतु इसकी मूल विचारधारा एक रही, जिसमें इसका मूल उद्देश्य यह रहा कि समान्य शिक्षा के साथ कुछ ऐसे कुशल एवं कौशलयुक्त क्रियाकलापों का आयोजन किया जाए, जो बच्चों को भावी जीवन के लिए तैयार करें। विभिन्न आयोगों एवं समितियों के अनुसार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस.यू.पी.डब्ल्यू.) – "SUPW may be described as purposive and meaningful manual work resulting in either goods or services which are meaningful to the society."

(ईश्वर भाई पटेल कमेटी, 1977)

स्वतंत्रता से पूर्व गांधी जी ने एक ऐसी शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की जो हस्त शिल्प के माध्यम से दी जाती थी। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा —

"मेरे विचार का संदर्भ केवल इतना है कि शिल्पकला के माध्यम से केवल उत्पादन कार्य को ही न बढ़ाया जाए, बल्कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का भी विकास करे, सेवाग्राम में स्थित शिक्षकों से इस बात पर ज़ोर दिया गया कि शिक्षा अनिवार्य रूप से व्यावसायिक एवं कार्य प्रधान गतिविधियों पर आधारित होकर वृत्ताकार पथ पर गति करे। जब हम कपास की गाँठ लेते हैं, इसके बीजों को साफ़ करते हैं, इसकी धूल को साफ़ करते हैं, धुनाई करते हैं, धागा निकालते हैं, तथा कपड़ा बुनते हैं, तो उस वक्त कृषि, उद्योग, इतिहास एवं भूगोल, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र भी उस एक हस्तशिल्प के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है।"

(रूहेला, सत्यपाल 2007)

कोठारी आयोग ने सन् 1966 में 'कार्यानुभव' की बात कही, आयोग ने कार्यानुभव पर ज़ोर देते हुए कहा कि कार्य अनुभव सभी प्रकार की शिक्षा में अनिवार्य अंग के रूप में होना चाहिए और यह विद्यालय, घर, क्षेत्र, कार्यशाला, निर्माणशाला में किये जाने वाले उत्पादक कार्य अथवा अन्य उत्पादक स्थिति के रूप में होना चाहिए। उन्होंने कार्यानुभव के निम्न उद्देश्य प्रस्तुत किए—

- कार्य के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास।
- श्रम के प्रति सम्मान की भावना रखना।
- वर्ग एवं स्थिति से संबंधित भेदभाव को निकालना।
- उत्पादकता के सिद्धांत पर ज़ोर देना।
- विद्यार्थियों में किसी निश्चित लाभदायक अभिक्षमता का विकास करना।

कुछ वर्षों पश्चात् सन् 1978 ई. में ईश्वर भाई पटेल समिति ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शब्दावली का प्रयोग किया तथा इसे +2 अधिगम स्तर पर दी जाने वाली सामान्य शिक्षा का ही एक हिस्सा कहा। कार्यानुभव के स्थान से समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शब्दावली अपने आप में अधिक अभिव्यक्तिपरक एवं व्यावहारिक पक्ष पर अधिक ज़ोर डालता है।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एक प्रकार से उद्देश्यपूर्ण, अर्थपूर्ण, हस्त प्रधान कार्य है जो वस्तुओं एवं सेवाओं के रूप में समुदाय के लिए उपयोगी हो। इस प्रकार का कार्य यांत्रिक ही नहीं बल्कि प्रत्येक स्तर पर इसमें योजना, विश्लेषण, गहन तैयारी सम्मिलित होगी। इस प्रकार यह शैक्षिक गुणों से युक्त है।

ईश्वर भाई पटेल समिति ने विद्यालयी पाठ्यक्रम हेतु विभिन्न प्रस्ताव एवं सुझाव रखे। जिनमें से कुछ अग्रलिखित हैं—

- 6 से 14 वर्ष की आयु तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, प्रथम पाँच वर्ष पूर्व प्राथमिक स्तर, शेष तीन वर्ष की उच्च प्राथमिक स्तर के लिए।
- मातृभाषा में अनुदेशन
- सभी शिक्षण विषय अधिक से अधिक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्रियाकलापों से संबंधित हो।
- वस्तुओं से प्राप्त आय विद्यालय के लिए किसी न किसी प्रकार से उपयोगी हो, परंतु इसके लिए उस आय पर अधिक दबाव ना डाला जाए।
- बच्चों का आंतरिक मूल्यांकन हो यह मूल्यांकन उनके द्वारा दिन-प्रतिदिन किए गए कार्य के आधार पर हो तथा इसमें किसी अन्य बाह्य परीक्षा की आवश्यकता नहीं है।
- किताबों को अधिक महत्व न देना, पाठ्यक्रम में स्वच्छता, स्वास्थ्य, नागरिकता, खेल एवं पुनर्निर्माण को सम्मिलित करना

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के आधार

1. दार्शनिक आधार

ईश्वर भाई पटेल समिति ने विचार व्यक्त किया कि समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का विकास बेसिक शिक्षा के मूल में विद्यमान गांधीवादी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए। विकेंद्रीकरण पर आधारित उनकी विचारधारा सर्वोदय समाज के विकास से संबंधित थी। हमारा संविधान देश को एक प्रजातांत्रिक, सामाजिक, पंथनिरपेक्ष, काल्पनिक मूल्यों पर आधारित बनाने

का प्रयास करता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों में संलग्न रखा जाए, ताकि उनमें उचित प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास हो सके।

2. सामाजिक आधार

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से संबंधित क्रियाकलाप हमारे बच्चों को सामाजिक इच्छाओं, मूल्यों, प्रवृत्तियों तथा प्रजातांत्रिक पंथनिरपेक्ष नागरिक बनाने के प्रयास के प्रति समर्पित हैं। ईश्वर भाई पटेल समिति के अनुसार पाठ्यक्रम में सामाजिक सेवा के घटक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सहबद्ध होंगे। उदाहरण के लिए, जब बच्चे सामाजिक सेवा के रूप में पर्यावरणजन्य स्वच्छता के कार्यक्रम में सहभागिता लेते हैं, तो वह एक साथ सम्मिश्र खाद के लिए गड्ढे तैयार कर सकते हैं।

3. आर्थिक आधार

समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों में भागीदारी तथा उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने पर विद्यार्थी आत्मनिर्भर, मितव्ययी, आर्थिक रूप से उत्पादक तथा स्वयं के लिए, परिवार के लिए एवं समुदाय के लिए उपयोगी हो जाता है। हस्तप्रधान कार्यों से निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के विक्रय से विद्यार्थी धनराशि अर्जित कर सकते हैं तथा यदि आवश्यक हो तो आवश्यकता एवं रुचि अनुसार इसे व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं।

4. मनोवैज्ञानिक आधार

विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में अधिक रुचि होती है। जब एक विद्यार्थी अकेला होता है, तब वह वार्तालाप, निर्माण, कलात्मक अभिव्यक्ति, विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुओं के एकत्रीकरण के खेल में अपनी रुचि प्रदर्शित करता है। उस समय वह वातावरण के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए उत्सुक रहता है, जिसमें उसे स्वयं करके सीखना अत्यंत प्रिय है। विभिन्न सामूहिक क्रियाकलाप विद्यार्थियों का समाजीकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विविध आयाम

व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार अवसर उपलब्ध करने हेतु आवश्यकता है कि समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विभिन्न आयामों पर दृष्टिपात किया जाए, जो अग्रलिखित हैं —

1. विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियाँ लगाना एवं सब्जियाँ बोना
2. विद्यालय में घास का मैदान तैयार करना
3. गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाना
4. विद्यालय की चारदीवारी पर हेज लगाना, लताएँ लगाना
5. वृक्षारोपण
6. कताई-बुनाई
7. काष्ठ शिल्प
8. ग्रंथ शिल्प
9. चर्म शिल्प
10. धातु शिल्प
11. धुलाई, रफ़ू, बखिया
12. रंगाई और छपाई
13. सिलाई
14. मूर्ति कला
15. मत्स्य पालन

16. मधुमक्खी पालन
17. मुर्गी पालन
18. साग-सब्जी का उत्पादन
19. फल संरक्षण
20. रेशम तथा टसर का काम
21. सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण
22. हाथ से कागज़ बनाना
23. फोटोग्राफ़ी
24. रेडियो मरम्मत
25. घड़ी मरम्मत
26. चाक, मोमबत्ती बनाना
27. कालीन एवं दरी का निर्माण
28. लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौनों का निर्माण
29. बेकरी और कन्फ़ेक्शनरी का काम
30. उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य

ये समाजोपयोगी उत्पादक कार्य नवीन सृजन के साथ-साथ पुनः चक्रण, पुनः निर्माण, तथा पुनः उपयोग से संबंधित हैं।

ईश्वर भाई पटेल समिति द्वारा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के प्रस्तावित क्षेत्र—उत्पादक कार्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से संबंधित हैं, जिनमें निम्नलिखित छः क्षेत्र सम्मिलित हैं—

1. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता
2. भोजन
3. आश्रय देना
4. पुनर्निर्माण
5. सामुदायिक कार्य
6. सामाजिक सेवा

प्रस्तुत अध्ययन समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (पुनर्निर्माण) के अंतर्गत न्यूज़ पेपर एवं कार्ड बोर्ड (गत्ते) से निर्मित कुछ मनोरंजनात्मक एवं उपयोगी वस्तुओं के निर्माण से संबंधित है। एसयूपीडब्ल्यू से संबंधित क्रियाकलापों का आयोजन करने से पूर्व शिक्षकों को तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

1. विद्यालय में उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के अनुसार क्रियाकलापों का आयोजन करना
2. कार्यकारी स्टॉफ़ के अतिरिक्त कोई अन्य शिक्षक की उपस्थिति अनिवार्य नहीं।
3. एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। वातावरण के अनुसार शिक्षकों को यह समझना आवश्यक है कि कौन से क्रियाकलाप अनिवार्य हैं?, कौन से होने चाहिए एवं कौन से क्रियाकलाप हो सकते हैं?

पाठ्यक्रम में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का स्थान

शिक्षा बच्चों को संपूर्ण जीवन के लिए तैयार करती है, लेकिन परंपरागत शिक्षा संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा जीविकोपार्जन के लिए पूर्ण नहीं है। सामान्य शिक्षा इस उद्देश्य के लिए अपूर्ण है। अतः शिक्षा के विभिन्न स्तरों से ही विविधतायुक्त पाठ्यक्रम की शिक्षा देने का सुझाव दिया जाता है।

विद्यालय में कार्यान्वित समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

1. न्यूज़ पेपर बैग

आवश्यक सामग्री—मैगजीन पेपर स्टिक, फ़ेविकोल, धागा, सुई।

प्रक्रिया

प्रथम चरण—पेपर बैग बनाने के लिए 15 मैगज़ीन स्टिक एक सामान्य दूरी में रखते हैं। दूरी में रखकर एक तरफ से टेप लगाकर उनको मज़बूती से बाँध देते हैं। उसके बाद एक तरफ से आखिरी स्टिक में एक स्टिक लगाकर, उन 16 स्टिक के बीच एक स्टिक ऊपर एक स्टिक नीचे कर उसे बुनना प्रारंभ करते हैं। अंतिम स्टिक से मोड़कर दूसरी स्टिक पर ले जाते हैं। लगभग 15 सेमी. बुनने के बाद दोनों किनारे से दो स्टिक छोड़कर लगभग 4 अँगुल बुनते हैं जिससे उसका ऊपर का भाग तैयार हो जाए।

द्वितीय चरण—पेपर बैग को पूरा बुनने के बाद निकली हुई स्टिक को बुनी हुई स्टिक के अंदर कर

चिपका देते हैं। पूरा बुनने के बाद उसे मोड़कर सुई एवं धागे से दोनों किनारों को सिलते हैं। पेपर बैग तैयार है।

ट्राई आउट—सरस्वती बालिका इंटर कॉलेज, अतर्रा।

परिणाम — सफल

प्रत्येक विद्यार्थी में अपनी विशिष्ट प्रतिभा होती है। यह प्रतिभा उनके द्वारा किये गए कार्यों में देखने को मिलती है। सिखाए गये कार्यों में उन्होंने सहर्ष निपुणता के साथ नवीनता का समावेश किया। कुछ विद्यार्थियों की प्रतिभा देखने एवं सराहने योग्य थी।

वर्तमान में आवश्यकता है कि विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसी प्रकार के अन्य क्रियाकलापों का समायोजन किया जाएँ, जिससे ज्ञान के साथ कौशल विकास भी हो।

विद्यालय में समाजोपयोगी कार्यों का आकलन

विद्यालयों में एस.यू.पी.डब्ल्यू. क्रियाकलापों का आकलन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक है —

1. विद्यार्थियों की आयु
2. कक्षा का स्तर
3. शिक्षण-अधिगम बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त समय अंतराल पर सदस्यों द्वारा क्रियाकलापों का मूल्यांकन किया जाए, जिससे अवरोधों को दूर किया जा सके
4. जितना संभव हो सके क्रियाकलापों का मूल्यांकन उसी शिक्षक के द्वारा किया जाए जो कक्षा-कक्ष में क्रियाकलापों को आयोजित करते हैं
5. एक त्रि-बिंदु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक अथवा पंच बिंदु मापनी जैसे

उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक, निम्न, अति निम्न के आधार पर आकलन किया जाना चाहिए।

जीवन में संतुलन आवश्यक है तथा संतुलित जीवन के लिए कला पक्ष का विकास होना आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने में अद्वितीय है, प्रतिभा संपन्न है। यह परिवार, शिक्षकों एवं समाज की ज़िम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर अवसर उपलब्ध कराए, ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके जिससे उनके गुणों से समाज लाभान्वित हो सके। विद्यालय को विद्यार्थियों की निर्माणशाला माना जाता है तथा शिक्षकों को निर्माता। विद्यालयों में एकसमान शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ यह आवश्यक है कि व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखते हुए कुछ समाजोपयोगी एवं उत्पादक क्रियाकलापों का आयोजन किया जाए।

संदर्भ

कोचर, एस.के. 1987. पिवोटल इश्यूज़ इन इण्डिया. स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड., नयी दिल्ली.

मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय. 1977. ईश्वर भाई पटेल समिति 1977. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय. दिल्ली

रूहेला, सत्यपाल. 2007. वर्क एक्सपीरियंस एजुकेशन. डायमंड पॉकेट बुक्स, नयी दिल्ली.